मण्डी जिला के मन्दिरों में स्थापित प्रमुख मूर्तियों एवं चित्रों का कलात्मक अध्ययन

कुमारी स्नेहलता
शोधकत्री, दृश्यकला विभाग, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला

हिमाचल प्रदेश के लोगों की सृजनात्मक शक्ति का परिचय हमें उनकी कलात्मक अभिव्यक्ति में मिलता है और इसी सृजनात्मकता की जीवंत उदाहरण हैं मण्डी जिला के मन्दिरों में स्थापित प्रमुख मूर्तियों एवं चित्रों का कलात्मक अध्ययन। कला के प्रचार एवं प्रसार में एक कलाकार की महत्वपूर्ण भूमिका होती है इसका अनुमान मण्डी जिले के मन्दिरों में स्थापित मूर्तियों से लगाया जा सकता है सत्य पूछा जाए तो यही देवी–देवता यहां के लोगों को सुख–दुःख के साथी है। मूलतः यहां की संस्कृति को देव संस्कृति कहा जाता है और परम्परा के अनुसार देवी या देवताओं की पूजाअर्चना नियमित किसी मूर्ती या चिन्ह के रूप में की जाती है और यहां के लोक कलाकारों द्वारा यहां के देवी व देवताओं को मूर्तियों एवं चित्रों के द्वारा रूप प्रदान किया गया है जो अति कलात्मक है।

स्थापत्य मूर्तीकला तथा अन्य कलारूपों के अप्रतिम भण्डार जिला मण्डी के मन्दिर स्वयं में श्रेष्ठ है। जिनमें स्थापित मूर्तियाँ चित्र व शिलालेख प्राचीनता के परिचायक हैं और देवभूमी हिमाचल में धार्मिक संस्थान तथा पूजा स्थल के रूप में मन्दिरों का इतिहास अत्यंत प्राचीन है इनमें स्थापित मूर्तियों व उनकी बनावट शुद्ध देशीय सिद्धान्तों और स्थापत्य की परंपरागत शैली क` अनुसार ही है इनका विस्तार अनेक कलाखंडों में हुआ ऐसे जैसे एक लहर के बाद दूसरी आगे बढ़ती जाती है।

इन मूर्तियों की कलात्मकता में, हमारी संस्कृति के, सामाजिक परम्पराओं के जींवत दर्शन होते हैं। इनका निर्माण लोककलाकारों के द्वारा ही किया गया परन्तु देश के अन्य भागों में होते परिवर्तनों की देखादेखी यहां भी बड़े–बड़े मन्दिर व मूर्तियां बनने लगी इन मूर्तियों के निर्माण के लिए यहां उपलब्ध सभी साधनों का प्रयोग किया गया। काष्ठ पाषाण अष्टधातु, पंचधातु, कांसा, सोना चांदी पीतल सभी धातुऐं इसमें शामिल हैं।1

वास्तु व मूर्तिकला के क्षेत्र में सातवीं व आठवीं शताब्दी में यहां अधिकतर मूर्तियों का निर्माण किया गया अतः यह काल हिमाचल का स्वर्णकाल कहलाया। हिमाचल प्रदेश में कई संस्कृतियों का संगम हुआ है और इसका प्रभाव आज हम मंदिर निर्माण, कला, स्थापत्य, मूर्तीकला के रूप में देख सकते हैं। समय–समय पर आक्रमणों के कारण मैदानी क्षेत्रों के लोग पहाड़ी क्षेत्रों के सम्पर्क में आए और इसी तरह कला में भी निरन्तर परिवर्तन देखा गया।

इस प्रकार संस्कृति का भंडार बहुत विशाल है इसे केवल एक शोध या लेख में बांध पाना बहुत कठिन है परन्तु शोध के अन्तर्गत कुछ रोचक मूर्तियाँ व मन्दिरों का दौरा करने पर मैंने पाया कि यहां स्थापित मूर्तियाँ उनका निर्माण, कला शैली, इनमें स्थापित देवी एवं देवता वेशभूषा, मोहरे तथा उनको निर्माण में लोक कला के दर्शन तथा एक क्षेत्र का दूसरे क्षेत्र में प्रभाव देखा जा सकता है जिसमें समय के साथ–साथ परिवर्तन भी हुआ है।2

भैरव स्तंभ पांगणा

चित्र संख्या – 1
(भैरव स्तंभ पांगणा)

जिला मण्डी के करसोग क्षेत्र के अन्तर्गत आने वाले पांगणा मन्दिर जो महामाया पांगणा के नाम से प्रसिद्ध है कला एवं स्थापत्य के भण्डार से परिपूर्ण है और मन्दिर में स्थापित भैरव स्तंभ अति कलात्मक है। यह भी मान्यता है कि इसकी उपासना के बिना महामाया का समीप्य नहीं मिलता है। इस कलात्मक स्मारक में अनेक कलात्मक काष्ठ व प्ररस्पर प्रतिमाऐं विद्यमान है। कलात्मक प्ररस्तर प्रतिमाओं के साथ ही काष्ठ कला के दर्शन भी हमें इस छः मंजिले स्मारक (मंदिर) में होते हैं यह स्मारक शक्ति का प्रतीक है तथा इसमें कई रहस्य समाहित है।

प्राचीनकाल से ही इन सर्वशक्तिमान रहस्यमयी प्रतीकों की तन्त्रषास्त्रोक्त विधि–विधान से पूजा अर्चना होती रही है। इन प्रतीकों का काल 765ई0 माना गया है। इन्हीं श्री विग्रहों में से एक भैरव स्तंभ भी है।

महाशक्ति महामाया पांगणा की साधना के लिए काष्ठ निर्मित यह कला स्तंभ जो अति कलात्मक है उनकी आराधना के लिए आवश्यक बताया गया है। प्राचीन काल में जब बलि प्रथा का दौर था तो मां को दी जाने वाली बलि की पहली रक्त की धारा इस स्तंभ को अर्पित की जाती थी। यह भी मान्यता है कि शनि के प्रकोप के निवारण के लिए इस स्तंभ की पूजा अर्चना करने से व्यक्ति विशेष पर आने वाली विपदा का शीर्घ निवारण हो जाता है।3

इसकी कार्यशैली अदभुत है तथा इस स्तंभ का विधिवत भैरव सांकलो/चिमटों से श्रृंगार किया गया है जो कि कला की दृष्टि से भिन्न है। जनश्रुति के अनुसार भैरव का गूर देव आवेश में आकर श्रद्धालुओं की पीठ पर सांकलो/चिमटों से शरणागतों को आशीर्वाद देकर रक्षा कवच प्रदान करता है। यह स्तंभ इसकी धार्मिक विशेषताओं के कारण अपने आप में विशेष है।

माहामाया पांगणा (मुखौटे)

जिला मण्डी के करसोग क्षेत्र में स्थित महामाया पांगणा की छठी मंजिल में स्थापित धातु के मुखौटे (मोहरे) जो कि देवी महामाया को समर्पित मां की पंचधातु की बनी (मुख्य–प्रतिमाऐं) मोहरे हैं। मुख्य मोहरा सोने का बना है जो महामाया का है। एक मोहरा अष्ट धातु तथा दो मोहरे चांदी के हैं। मां के मुख्य मुखौटे में आंखे बड़ी–बड़ी तथा चिबुक गोल हैं आंखें सुन्दर तथा पतली अंकित की गई है। मां के शीर्ष पर बहुत सुन्दर कलात्मक मुखौटे का अंकन किया गया है दोनों बड़े मुखौटों के बीच में पृष्ठभूमि में एक अन्य चांदी का मुखौटा है तथा बाईं ओर चांदी का मुखौटा है जो कि गुग्गा महाराज का है, मां के रक्षक के रूप में उनके साथ स्थापित है। इन्हें सिंहासनी गुग्गा के नाम से जाना जाता है मां के दोनों मोहरों में मुकुट परस्पर भिन्न है मुख्य बड़े मुखौटे में मां के मस्तक पर गोल तिलक स्थापित है जबकि दूसरी मुखौटे में आंख स्थापित की गई है। मुख्य मुखौटे में दोनों ओर दो सर्प अंकित किए गए है। मां का श्रृंगार नथनी जो कि वहां की लोक शैली में बनी है तथा गले में चांदी का रानी हार उनकी सुन्दरता को बढ़ा रहा है जो कि कला की दृष्टि से श्रेष्ठ है। इन मुखौटों का

चलन हिमाचल प्रदेश के पहाड़ी क्षेत्रों में अधिक देखा गया है। जो यहां की लोक व क्षेत्रीय कला के परिचायक है।

चित्र संख्या – 2
(महामाया पांगणा)

मन्दिर में स्थापित मुखौटों में से एक मुखौटा प्रायः मन्दिर में स्थापित रहता है तथा एक मुखौटे की देवीयात्रा के दौरान देव रथ में स्थापित कर मां के प्रतीक रूप में ले जाया जाता है।दोनों मुखौटे नवीन हैं तथा कलाकारों द्वारा किया गया है जिसमें मिश्रित धातु का प्रयोग किया गया है। साथ में स्थापित चांदी का लघु मुखौटा भी महामाया पांगणा का है जो कि प्राचीन है। यहां के लोगों की मुखौटों व मां के प्रति देव आस्था वे कारण नित प्रति पूजा–पाठ व समय–समय पर अनुष्ठानों का आयोजन किया जाता है तथा मां कामाक्षा के प्रति गहन विश्वास होने के कारण लोगों के अनुसार मां अदृश्य रूप से उनके हर सुख–दुख में शामिल होती है।

महामाया पांगणा का सिंहासन

महामाया पांगणा मन्दिर में अनेक कलात्मक मोहरे (मुखौटे) स्तम्भ एवं चित्र हैं उन्हीं में से एक महामाया पांगणा के सिंहासन का कलात्मक चित्र मुख्य मन्दिर में स्थित है। इस सिंहासन में महामाया पांगणा की अनेक शक्तियों का समावेश है।

चित्र संख्या – 3
(पांगणा सिंहासन)

सन् 1934 तक महामाया पांगणा के कलात्मक प्राचीन मन्दिर में जिस धर्म, तान्त्रिक विज्ञानिक, शक्तियों से सम्पन्न चमत्कारी, शिव पार्वती के श्री विग्रह रूपों सिंहासन की पूजा अर्चना व अभिषेक आदि विधि–विधान से होता रहा है। वही सिंहासन आज सुन्दरनगर में राजमहल के बन्द कमरे में पड़ा है।[4]

प्रदेश में अदभुत कलात्मक एकमात्र सिंहासन अज्ञान धातु से बना है तथा दशविद्याओं के शक्ति रूप में पूज्य है बुजुर्गों का मानना है कि वंश वृद्धि, व ऋद्धि–सिद्धि व दर्शन मात्र से श्रद्धालुओं की मनोकामना पूर्ण हो जाती है। यह श्री विग्रह प्लेटिनम, सोना, चांदी, तांबा, जस्ता, लोहा, सीसा, पारा आदि अष्टधातुओं के साथ अज्ञात धातुओं से बना है यह श्री विग्रह सैंकड़ों सालों से पांगणा वासियों के द्वारा पूजा जाता रहा है। परन्तु वर्तमान समय में यह कलात्मक सिंहासन सुन्दरनगर राजमहल में बन्द है तथा महामाया पांगणा में इसके दर्शन चित्र रूप में ही किए जा सकते हैं। प्राचीन समय में छः मास पांगणा व छः मास सुन्दरनगर में इस श्री विग्रह को रखने व पूजने का प्रावधान था परन्तु आज यह विकल्प सुलझाना बाकी है। तथा पांगणा के वासी आज भी इस सिंहासन

की देव कोटी में पुनः प्रतिष्ठित करने की आस लगाए हैं। अनेक कलाकृतियों से परिपूर्ण महामाया पांगणा की मूल प्रतिमा सुन्दरनगर राजमहल में बंद है।

मेरे शोध कार्य के अन्तर्गत जब मैंने इस सिंहासन को चित्र रूप में देखा तो मुझे इसके पीछे के रहस्य एवं कलात्मक आलंकरण को जानने की जिज्ञासा हुई। प्राप्त जानकारी के अनुसार इस विग्रह को स्थानीय भाषा में देवी का सिंहासन कहते हैं। सिंहासन में भगवान शिव एवं पार्वती जी नंदी पर विराजमान हैं सिंहासन में बहुत सी लघु आकृतियों का आलंकरण किया गया है परन्तु मुख्य मूर्ती रूप में भगवान शिव एवं मां पार्वती विराजमान है।

सिंहासन की तुलना तोरण से की जा सकती है इन प्रतिमाओं के पीछे ऊपर चापाआकर तोरण बनाया गया है जो मध्य में है तथा इसके दांयें तथा बांयें ओर छोटे–छोटे लघु तोरण आलंकृत हैं। मध्य में अलंकृत तोरण पर तीन कलश स्थापित हैं तथा अन्य दो पर दो कलश स्थापित किए गए हैं।

शिव भगवान जी के दाएं हाथ में त्रिशूल तथा दांये कंधे के पास सिंहासन के तोरण पर गणेश जी तथा पार्वती जी के बांये भाग में कार्तिकेय जी विराजमान हैं। सिंहासन की तोरण पट्टिका पर नवग्रह, शीर्ष भाग में सूर्य, श्रीविष्णु, मां सरस्वती व भावयुक्त अंगों की गति करते देवगण, सप्तऋषि, 64 योगनियाँ, भैरव आदि और 18 बाण इस सिंहासन में प्रतिष्ठापित हैं।

मां पार्वती जी के बांये पैर के नीचे स्वर्ग के गायक एवं गायकों के भगवान गन्धर्व जी विराजमान हैं। चित्र को देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि इतिहास, मूल संस्कृति और शिल्प सम्पूर्ण कला से परिपूर्ण यह सिंहासन जो सुंदरनगर राजमहल में बंद है उसे मन्दिर में स्थापित किया जाना चाहिए। क्योंकि कला के अतीत की पहचान हम तभी कर सकते हैं जब उसका साक्षात स्वरूप सामने हो।

कच्छप यन्त्र पांगणा

चित्र संख्या – 4
(कच्छप यन्त्र)

ईश्वर की दिव्य शक्तियों की प्राप्ति के लिए यन्त्र–तन्त्र विद्या हमारे समाज में प्राचीन कला से ही प्रचलित रही है और इसका जिक्र हमारे प्राचीन ग्रन्थों में भी है। ईश्वर के अलग–अलग नामों के साथ उनसे सम्बन्धित अलग यन्त्र हमारे धर्म ग्रन्थों में बताए गए हैं। महामाया पांगणा में प्रतिष्ठापित यह कच्छप यन्त्र अति प्राचीन व कलात्मक है साथ ही चमत्कारी एवं दुर्लभ भी है। हमारे धर्म ग्रन्थों में प्रभु की दिव्य शक्तियों की प्राप्ति के लिए यन्त्र–तन्त्र विद्या में कच्छप यन्त्र को मनोकामनाओं की पूर्ती का तथा भौतिक समृद्धि का प्रतीक माना गया है। मान्यता है कि श्री गणेश जी का आसन कच्छप है।[5] इस चमत्कारी कच्छप यन्त्र की संरचना कलात्मक है। जटिल ज्यमितीय संरचना से परिपूर्ण यह यन्त्र आज एक अबूझ पहेली बनकर विदेशी शोधकर्ताओं के सामने चुनौती है।

कच्छप यन्त्र की प्रत्येक रेखा में विराजमान शक्तिपुञ्ज में अनेक ऐसी अनेक शक्तियाँ आबद्ध हैं जो जीवन को श्रेष्ठता व सम्पन्नता देती है। श्रद्धापूर्वक भक्त इस यन्त्र के प्रति नतमस्तक होकर अपनी

रक्षा की कामना करते हैं। मान्यता है कि तन्त्र पूजा का उदभव बंगाल के सेन वंशीय सुकेत रियासत के संस्थापक राजा वीरसेन ने कच्छप यन्त्र की स्थापना पांगणा में की थी। ऐसी भी मान्यता है कि ऐशवर्य प्रदान करने वाले इस यन्त्र को केवल हिमाचल एवं उतराखंड में ही देखा जा सकता है। पत्थर की शिला पर कच्छप यानी कछुए का आलंकरण जिसकी पीठ पर ज्यमितीय रेखाओं का अलंकरण है परन्तु धार्मिक दृष्टि से इन रेखाओं का बड़ा महत्व है।

शोधकार्य के अन्तर्गत मैंने अनेक मन्दिरों का भ्रमण किया इस प्रकार का यन्त्र कहीं और स्थापित नहीं है। श्रद्धालु केवल दर्शन मात्र से मन्दिरों में आते हैं और इन कला स्मारकों के बारे में किसी को सम्पूर्ण ज्ञान नहीं है। किन्तु उन लोगों को जो प्राचीन भारतीय मन्दिर व मूर्ती शिल्प के प्रेमी है उन्हें यहां आकर जरूर देखना चाहिए कि आज के भौतिक युग में किस प्रकार यह कला आज भी इन कला चित्रों के रूप में जीवित है। साथ ही कला के संरक्षण और संवर्धन को युगों तक जीवित रखने के लिए इन विषयों पर शोध की आवश्यकता है।

हत्या देवी (राजकुमारी चन्द्रावती) पांगणा

राजकुमारी चन्द्रावती की पांगणा में आज भी देवी रूप में पूजा की जाती है। उनकी पूजा हत्या देई या हत्या (देवी) के रूप में की जाती है। सम्पूर्ण हिमाचल में इस तरह से किसी देवी की पूजा नहीं की जाती है। इसका इतिहास लगभग 350 वर्ष पुराना है। सन 1650 से 1663 तक राजा रामसेन ने सुकेत रियासत पर शासन किया उनकी बेटी चन्द्रावती पुरुष प्रधान वस्त्र पहनती थी। एक दिन राजपुरोहित ने उन्हें ये वस्त्र पहने देखा और उन्हें शंका हुई कि राजकुमारी किसी युवक से सम्बन्धित हैं और पुरोहित ने यह बात राजा से कही।

चित्र संख्या – 5
(हत्या देवी : रजत विग्रह)

चन्द्रावती के सतीत्व के प्रति जागृत शंका से राजा को बहुत दुःख हुआ तथा चन्द्रावली अपने ऊपर इस झूठे आरोप को सहन न कर पायी व उन्होंने आत्महत्या कर ली। मृत्यु के बाद जब उनके मृत शव को दफनाया गया तो शव छः माह के बाद भी सड़ा गला नहीं। चन्द्रावती को देवीकोट के भू–भाग में ही दफनाया गया। इस प्रकार उन पर लगा आरोप झूठा साबित हुआ तथा वे सत्य धर्मनिष्ट कहलाई और आज उनकी पूजा एक देवी रूप में प्रांगण में की जाती है।

देवी कोट के भूतल भाग में उनका उपासना केन्द्र है। अपने शोध के अन्तर्गत मैंने हत्या देवी के दो शिल्पांकन छात्रयात्रि दर्शाए हैं जिनके अन्तर्गत पहले छाया चित्र में चन्द्रावती व उनकी सहेली का स्वर्ण पत्र पर शिल्पांकन तथा दूसरे छाया चित्र में चन्द्रावती का रजत श्री विग्रह दर्शाया गया है।

स्वर्ण पत्र अंकित चन्द्रावाती को शिवलिंग की पूजा करते देखा जा सकता है। जिसमें हत्या देवी के बांयी ओर तथा दांयी ओर सखी अंकित है। मान्यता है कि राजकुमारी भगवान शिव की उपासक थी

चन्द्रावती के साथ जल पात्र भी दर्शाया गया है। वहीं बांयी ओर सखी के एक हाथ में मोर पंख (मोरछू) तथा बाएं हाथ में जल पत्र दर्शाया गया है।

चन्द्रावती के रजत विग्रह में बायें हाथ में माला तथा दांये हाथ में वीणा दर्शायी गई है। स्थानीय निवासी डॉ0 जगदीश शर्मा जी के अनुसार आज भी देवी रूप में पांगणा में उनकी उपासना की जाती है। तथा देवी कोट में भूतल में ही चन्द्रावती का उपासना केन्द्र है। उनकी पूजा स्व0 श्री साधुराम जी के परिवार के सदस्य आज भी करते हैं।

चित्र संख्या – 6
(हत्या देवी : स्वर्ग विग्रह)

नन्दी प्रतिमा (पांगणा शिवद्वाला)

करसोग क्षेत्र में शिव गण/ वाहन नन्दी की एक मात्र स्थानक प्रतिमा है। पांगणा जो कि सुकेत रियासत की राजधानी रही है। इसके प्राचीन शिवद्वाले के प्रवेश द्वार के सामने शिव गण/वाहन नन्दी की कलात्मक स्थानक प्रतिमा करसोग के लगीगा 108 शिव मन्दिरों में से केवल पांगणा में ही स्थापित है।

मान्यता है कि पांडव कालीन इसी मन्दिर में भीम व हड़िम्बा का विवाह हुआ था। महामाया पांगणा मंन्दिर के पूर्व–दक्षिण भाग के प्रवेश द्वार पर पांडवों द्वारा स्थापित इस नन्दी के नीचे नागराज व पूंछ को पकड़े एक बालक की आकृति अनाम शिल्पी के अध्यात्मिक पक्ष को दर्शाता है।

चित्र संख्या – 7
(नन्दी प्रतिमा पांगणा)

स्थानक नन्दी के दांए भाग में बैठी हुई आवस्था में एक अन्य लघु नन्दी भी है। मन्दिर में होने वाली प्रातः व सांयकालीन पूजा के बाद नन्दी नागराज व बाल विग्रह की भी नियमित पूजा होती है।

नन्दी की इस पाषाण प्रतिमा पर पीठ पर कलात्मक अंकन देखा जा सकता है जो कि शिल्पकला का उदाहरण है यह अंकन बारीक रेखांओं के रूप में किया गया है। आसन मुद्रा में स्थापित पाषाणमयी प्रतिमा में नन्दी की सुन्दर कलात्मक आंखे, सिर पर सींगों के पास आभूषण गले में माला पहनाई गई है। इस लघु नन्दी प्रतिमा में कुबड़ जो कि पीठ पर उभरा हिस्सा कहलाता है परस्पर खंडित है पीठ पर अलंकृत कपड़ा मध्य भाग से सादा है तथा उसके किनारों को सुन्दर अलंकृत पटिका दर्शायी गई है। नन्दी को लघु प्रतिमा में पूंछ साथ में स्थापित स्थानक नन्दी प्रतिमा की ओर मुड़ी हुई तथा उसकी टांगों को छूता हुआ दर्शाया गया है। वहीं स्थानक नन्दी प्रतिमा में गले में मोतीनुमा पाषाण अलंकृत माला जिसमें बीच में घण्टी अलंकृत है दर्शाया गया है। सींग खड़े तथा नोकदार दर्शाए गए हैं साथ

ही सींगें के पास आभूषण दर्शाए गए हैं। पीठ पर अलंकृत कूबड़ को उभरा हुआ दर्शाया गया है पीठ पर अलंकृत कपड़ा अंकित किया गया है जिसमें बारीक रेखाओं का अंकन तथा रेखाओं के माध्यम से अंलकरण देखा जा सकता है। स्थानक नन्दी प्रतिमा में पूंछ पकड़े एक मउब्य प्रतिमा अंकित है। इस प्रकार की मनुष्य प्रतिमा नन्दी के साथ लगभग सभी मन्दिरों में देखी जा सकती हैं परन्तु मेरे शोध कार्य के अन्तर्गत मैंने जिला मण्डी के लगभग सभी प्राचीन मन्दिरों का भ्रमण किया परन्तु इस प्रकार की नन्दी व लघु नन्दी प्रतिमा साथ में स्थापित मात्र पांगणा के मन्दिर में ही मिली जो कि शोध का अनूठा अनुभव था। साथ ही मैंने शोध में यह प्रयास किया है कि इस तरह की प्राचीन कृतियों को उन पर जानकारी प्राप्त करवाना जिनके विषय में शायद बहुत से लोगों को कलाकार की सृजनात्मकता का ज्ञान हीं नहीं है। और साथ ही हमारी प्राचीन संस्कृति व शिल्प की परिचायक इन मूर्तियों की सुरक्षा का दायित्व बहुत कुछ हम पर है जिनके विषय में शोध होना आवश्यक है।[6]

ममलेश्वर महादेव मन्दिर के सभामण्डप के सामने दीवार पर आलंकृत काष्ठ कला

करसोग घाटी में स्थित ममलेश्वर महादेव मन्दिर के मुख्यद्वार से प्रवेश कर सभामण्डप के सामने वह गर्भगृह को बाहरी दीवार जो काष्ठ निर्मित है अदभुत काष्ठ शैली की परिचायक है। काष्ठ निर्मित मन्दिर में की गई नक्काशी अद्भुत उदाहरण प्रस्तुत किया है। दीवार पर निर्मित नक्काशी के विषय रामायण, महाभारत, देवी–देवताओं, गन्धर्वों व तपस्वियों से सम्बन्धी है।

चित्र संख्या – 8
(काष्ठ कला)

चित्र संख्या – 9
(काष्ठ कला)

दीवार पर चित्रों की रचना छोटे व बड़े पैनल बनाकर की गई है दीवार पर मुख्य रूप से सबसे ऊपरी चौड़े पैनल पर समुद्रमंथन की आकृतियाँ दर्शायी गई है। जिसमें सम्पूर्ण देवता एवं दानव अंकित हैं। दूसरी पट्टिका पर शिवलिंग पर पुष्प अर्पित करती दो महिलाऐं दर्शायी गई हैं साथ में इस पट्टिका पर दशमहाविद्या का सम्पूर्ण ज्ञान अंकित है। तीसरी पट्टिका पर बेल बूटेदार फूल व पत्तियों का अंकन किया गया है। इसके पश्चात गणपति जी को दर्शाया गया है साथ में पारम्परिक पहाड़ी वाद्य यन्त्र बजाता एक पुरुष निर्मित है।

इस प्रकार सम्पूर्ण दीवार पर मूल पटि्टयाँ हाथी ज्योतिका, स्वास्तिक, मां दुर्गा तथा हिन्दू देवी–देवताओं से सम्बन्धित चित्रों की बड़ी ही कुशलता से दर्शाया गया है। लकड़ी पर प्रायः देवदार वृक्ष की है। पहाड़ी क्षेत्रों देवदार वृक्ष सम्भव मात्रा में पाये जाने के कारण यहां अधिकतर मन्दिरों का निर्माण पैगौड़ा शैली में हुआ तथा प्राचीन समय से होता आ रहा है। यह लकड़ी टिकाऊ होने के साथ ही काष्ठकला के लिए उपयुक्त मानी जाती है।

मन्दिर में निर्मित काष्ठकला कलात्मक तथा सौन्दर्यात्मक दृष्टि से बहुत आकर्षक है। शोधकताओं के लिए सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि काष्ठ पर निर्मित यह विषय कलात्मक होने के साथ–साथ प्राचीन इतिहास व मन्दिर की जानकारी शोधार्थी इन कलाकृतियों से अंदाजा लगा सकते हैं कि प्राचीन इतिहास क्या रहा होगा जो कि आने वाले शोधकर्ताओं के लिए हर्ष का विषय है।

उमामहेश व शिवपरिवार ममलेश्वर महादेव

ममलेश्वर महोदव मन्दिर के गर्भगृह में स्थापित उमामहेश अर्थात भगवान शिव एवं पार्वती की कलात्मक मूर्ती स्थापित है इनके साथ में यहां शिव परिवार भी स्थापित है। भगवान गौरी शंकर की यह मूर्ती अष्टधातु से निर्मित है तथा सम्पूर्ण शिव परिवार सहित यह मूर्ति जिला मण्डी के इस एकमात्र मन्दिर में स्थापित है इसके साथ ही यहां भगवान विष्णु की अनेक मूर्तियाँ जो कि पत्थर से निर्मित हैं परिक्रमापथ के आस–पास स्थापित हैं।

चित्र संख्या – 9
(शिव पार्वती)

इस मन्दिर की कला पांचवीं व छठी शताब्दी की मानी जाती है मुख्य मूर्ती धातु मूर्ती है जिसमें भगवान शिव व पार्वती साथ में हैं उनके साथ सम्पूर्ण शिव परिवार गणपति, कार्तिकेय, नन्दी, शेषनाग व उनके सैनिक वीरभद्र साथ में स्थापित हैं इस प्रतिमा की पीठिका में शिव का नटराज रूप भी स्थापित है।

भगवान शिव की मुख्य धातु प्रतिमा के पीछे शिव की प्ररस्तर प्रतिमा है जिसे दर्शन नहीं किए जाते हैं सिर पर मुकुट, गोल चिबुक गले में रुद्राक्ष की माला है मां पार्वती के गले में चांदी के हार नाक में नथनी तथा लाल वस्त्रों से मां का श्रृंगार किया गया है। सिंहासन पर लिखी लिपि का ज्ञान किसी को नहीं है। साथ ही मूर्ती के पास एक मोहरा भी अंकित है। पीठिका पर सुन्दर महीन कारीगरी की गई है। मन्दिर में विष्णु लक्ष्मी तथा शिव पार्वती की पाषाण प्रतिमाऐं प्रतिहार काल की आंकी गई है। साथ ही मूर्तियों में गढ़वाल तथा परमार शैली का स्पष्ट प्रभाव है जिसमें साज सज्जा का विशेष ध्यान रखा गया है।

ममलेश्वर महादेव मन्दिर (विष्णु प्रतिमा) वारह अवतार

करसोग घाटी के अन्तर्गत स्थित ममलेश्वर महादेव जो कि पूर्ण रूप से भगवान शिव को समर्पित मन्दिर है वहां पर भगवान विष्णु जी की मूर्ती का होना ममेल क्षेत्र में वैष्णव धर्म के व्यापक प्रभाव व विद्यमता को प्रमाणित करता है।

सम्पूर्ण करसोग क्षेत्र में पाये जाने वाले लगभग सभी मन्दिरों में इस मन्दिर को इस क्षेत्र का सबसे बड़ा शिव मन्दिर माना जाता है। परन्तु यहां स्थित हज़ारों साल पुरानी विष्णु भगवान जी की कलात्मक प्रतिमा आज भी यहां विद्यमान है।

चित्र संख्या – 10
(विष्णु प्रतिमा : ममेल)

विष्णु भगवान जी की यह प्रस्तर प्रतिमा विशाल होने के साथ–साथ अद्‌भुत कला से पूरिपूर्ण है। वाराह भगवान (विष्णु जी) के बड़े ही अदभुत दिव्य स्वरूप के दोनों हाथों में शंख, चक्र, गदा धारण किए मूर्तीबध किया गया है। इस श्री विग्रह के सौम्य मुख के दोनों ओर सूकर (सुअर) रूप मुख बने हैं। विष्णु भगवान की यह स्थानक मूर्ति कला की दृष्टि से श्रेष्ठ है।

विष्णु भगवान की यह प्रतिमा चर्तुभुजी थी परन्तु सिक्खों के आक्रमण के कारण खंडित होने पर कालान्तर रूप में केवल द्विभुजी रूप के ही दर्शन किए जा सकते हैं।

मूर्ती सुन्दर पीठिका (उत्पीरिका) पर स्थापित है। मूर्ती के पैरों के दोनों ओर भू–देवी की प्रतिमा स्थापित है। गले में हार दर्शाया गया है। कटि (कमर) में धोती दर्शाई गई है गले में पैरों को छूती हुई बनमाला दर्शायी गई है। सिर पर ऊंचा मुकुट सुशोभित है जिस पर महीन कारीगिरी देखी जा सकती है। पीठिका पर भगवान गणपति गन्धर्व तथा स्वर्ग के देवी–देवताओं के दर्शन किए जा सकते हैं।

प्रतिमा में विष्णु भगवान का मुख गोल दर्शाया गया है। भौंए तनी हुई तथा ऊंची दर्शाया गया है। इस प्रकार आज के सन्दर्भ में यह प्रतिमा लोगों की आपार श्रद्धा व भक्ति की प्रतीक है यह प्रमाण यहां पर आने वाले भक्तों से मिलता है परन्तु इनकी कलात्मकता बनी रहे इसके लिए इनके उचित रख–रखाव व संरक्षण की सुविधा होनी आवश्यक है क्योंकि इन्हीं कृतियों से प्रदेश के इतिहास का अवलोकन होता है।

जनश्रुति के अनुसार 1840–45 के मध्य ''सिंध–संघाड़े'' (सिखों के आक्रमणकारियों के एक दल ने करसोग क्षेत्र के मन्दिरों, मूर्तियों, गढ़ों (सैनिक किलों) को क्षति पहुंचाई भी जिसके कारण यह मूर्तियाँ खंडित हुई।

भेखल का कलात्मक ढोल

भेखल नामक लकड़ी का कलात्मक ढोल जिला मण्डी के कुछ मन्दिरों में देखने को मिलता है। कलाविदों के लिए निश्चिय ही यह आकर्षण का विषय है। कलात्मक होने के साथ ही यह ढोल विशाल है।

चित्र संख्या – 11
(भेख का ढोल)

भेखल नाम की लकड़ी का यह ढोल दो फुट का है। यह ढोल दर्शकों को आश्चर्य में डाल देता है। सामान्यत: भेखल छोटे–छोटे तनों के रूप में फैली एक झाड़ी होती है जिसे वर्तमान समय में भी जिला हिमाचल के कुछ हिस्सों में देखा जा सकता है। परन्तु वर्तमान में यह केवल झाड़ी के रूप में पाया जाता है।[7]

परन्तु प्राचीन काल में यह वृक्ष कितना विशाल रहा होगा इसका अंदाजा इस विशाल ढोल के रूप में लगाया जा सकता है पौराणिक मत के अनुसार ऐसे पांच ढोल बने जो इस समय परशुराम के प्रसिद्ध पांच स्थलों ममेल करसोग, काओ कामाक्षा, निरमण्ड, नीरथ और दत्तनगर के मन्दिरों में सुरक्षित हैं। जो हमरी प्राचीन कला व प्राचीन संस्कृति के परिचायक हैं।

संन्दर्भ ग्रन्थ

विशिष्ठ, सुदर्शन मण्डी देव मिलन, एरागॉन पब्लिशर्ज एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स दिल्ली, प्रथम संस्करण 2007
सुदर्शन विशिष्ठ देव परम्परा, प्रकाश सुहानी
एस0आर0, हरनोट, हिमाचल के मन्दिर व उनसे जुड़ी लोक–कथाऐं, मिनर्वा बुक हाऊस, 46 दी माल शिमला, प्रथम संस्करण 1991, पृ0 12,13
ठाकुर, डॉ0 सूरत हिमाचल की देव संस्कृति मन्दिर मेले एवं त्योहार, पृ0 174
अल्काजी, रोशन प्राचीन भारतीय वेशभूषा, प्रकाशक नेशनल बुक ट्रस्ट इंडिया
इन्साईक्लोपिडिया ऑफ रिल्जिन, हे स्टिगजगज जेम्स एण्ड एथिक्स, हेस्टिगज जेम्स
शास्त्री, शशिकान्त सोमसी, हिमाचल प्रदेश भाषा, कला एवं संस्कृति विभाग द्वारा सम्पादित पत्रिका 1982, अंक 4, पृ0 69
शर्मा, रूप हिमाचल प्रदेश अंधकार से प्रकाश की ओर, करण प्रकाशन पृ0 210